→ **अप्रयोगात्मक विधि** — समाज मनोवैज्ञानिकों द्वारा सामाजिक व्यवहार का अध्ययन करने के लिए निम्नलिखित अप्रयोगात्मक विधियों का भी प्रयोग किया जाता है: —

(i) प्रेक्षण विधि (Observation Method)
(ii) सर्वे विधि (Survey Method)
(iii) व्यक्ति इतिहास विधि (Case History Method)
(iv) क्षेत्र अध्ययन विधि (Field Study Method)
(v) समाजमितीय विधि (Sociometric Method)

प्रेक्षण विधि — जब समाज मनोवैज्ञानिक अध्ययन किये जाने वाले चर में जोड़-तोड़ नहीं कर पाते हैं तो वे प्रेक्षण विधि का प्रयोग करते हैं इसमें व्यक्तियों के व्यवहारों का प्रेक्षण प्रयोगकर्ता द्वारा प्रायः एक स्वाभाविक परिस्थिति में किया जाता है।

प्रेक्षक की भूमिका के आधार पर समाज मनोवैज्ञानिकों ने प्रेक्षण को दो भागों में बाँटा है —

- सहभागी प्रेक्षण और
- असहभागी प्रेक्षण।

Scanned with CamScanner

• सहभागी प्रेक्षण — इस तरह के प्रेक्षण में प्रेक्षक प्रेक्षण किये जाने वाले समूह में शामिल हो जाता है और समूह की क्रियाओं में स्वयं शामिल होकर उनके व्यवहारों का वस्तुनिष्ठ प्रेक्षण भी करता रहता है और आँकड़े संग्रह कर उससे उपयुक्त निष्कर्ष प्राप्त करता है। प्रेक्षक व्यक्तियों के व्यवहारों का प्रेक्षण एक स्वाभाविक संदर्भ में करता है। चूँकि प्रेक्षक समूह की क्रियाओं में सक्रिय भाग लेता है, तो कभी-कभी वह बहुत सी सामाजिक अन्तःक्रियाओं को रिकार्ड करना भी भूल जाता है और उसका प्रेक्षण दोषपूर्ण हो जाता है।

• असहभागी प्रेक्षण — असहभागी प्रेक्षण में प्रेक्षक किसी सामाजिक व्यवहार का प्रेक्षण तो स्वाभाविक परिस्थिति में करता है परन्तु समूह के व्यवहारों या क्रियाओं को करने में स्वयं शामिल नहीं रहता है, बल्कि दूर से ही समूह या व्यक्ति के व्यवहारों का प्रेक्षण कर आँकड़ों का संग्रहण करता है।

असहभागी प्रेक्षण चूँकि संगठित होता है, इसलिए इससे प्राप्त आँकड़े अधिक विश्वसनीय, वस्तुनिष्ठ एवं निर्भर योग्य होते हैं। असहभागी प्रेक्षण की कठिनाई यह है कि जब व्यक्ति को यह पता चल जाता है कि उसका प्रेक्षण किया जा रहा है, तो उसके व्यवहार स्वाभाविक नहीं रह पाता है जिससे प्राप्त परिणाम दोषपूर्ण हो जाते हैं।

सहभागी एवं असहभागी दोनों ही प्रेक्षण विधियों के कुछ दोष एवं गुण हैं। इन दोनों में कौन अधिक उचित होगा यह इस बात पर निर्भर करता है कि किस सामाजिक व्यवहार का अध्ययन किस परिस्थिति में और किस उद्देश्य से किया जा रहा है।

सर्वे विधि — सर्वे विधि वह विधि है जिसमें शोधकर्ता एक प्रतिनिधिक प्रतिदर्श लेकर किसी सामाजिक समस्या के प्रति व्यक्तियों की मनोवृत्ति, विचार, मत आदि का अध्ययन साक्षात्कार या प्रश्नावली द्वारा करता है। सर्वे विधि में प्रायः एक बड़ी जनसंख्या के भिन्न-भिन्न वर्गों के

Scanned with CamScanner

लोगों को प्रतिदर्श के रूप में सम्मिलित किया जाता है।

सर्वे विधि में समाज मनोवैज्ञानिकों द्वारा मूलतः चार तरह के प्रविधियों का प्रयोग किया जाता है—

APPOINTMENTS

• **साक्षात्कार सर्वे** — Cannell & Kahn (1968) के अनुसार "साक्षात्कार सर्वे दो व्यक्तियों के बीच का वार्तालाप है, जिसकी शुरुआत साक्षात्कारकर्ता शोध संबंधी सूचनाएँ प्राप्त करने के उद्देश्य से प्रारंभ करता है और क्रमबद्ध वर्णन, पूर्वकथन या व्याख्या करने के शोध उद्देश्य द्वारा उल्लेखित विषयों पर केन्द्रीभूत करता है" इसका प्रयोग सभी तरह के व्यक्तियों अर्थात अनपढ़ एवं शिक्षित दोनों पर किया जा सकता है क्योंकि व्यक्ति अपनी प्रतिक्रिया बोलकर देता है।

• **प्रश्नावली सर्वे** — इस विधि में शोधकर्ता यादृच्छिक रूप से चयन किये गये व्यक्तियों के समूह पर अध्ययन विषय से संबंधित प्रश्नों की एक सूची तैयार कर उसे एक पुस्तिका के रूप में छपवा लेता है और डाक या अन्य माध्यम द्वारा उन व्यक्तियों के पास इस आग्रह के साथ भेज देता है कि वे यथासंभव प्रश्नों को पढ़कर सही उत्तर के साथ प्रश्नावली को लौटा देंगे। इसका एक प्रमुख दोष यह है कि प्राय: उत्तरदाता प्रश्नावली को लौटाते ही नहीं है, या किसी दूसरे व्यक्ति द्वारा उत्तर देकर लौटा दिया जाता है जिससे प्राप्त परिणाम दोषपूर्ण हो जाते हैं।

• **दूरभाष सर्वे** — इस विधि में सर्वेकर्ता टेलिफोन पर ही चयनित व्यक्तियों से शोध समस्या से संबंधित प्रश्नों का उत्तर प्राप्त करता है और उसके आधार पर एक निष्कर्ष पर पहुँचने की कोशिश करता है। इसमें सर्वेकर्ता का धन एवं समय दोनों की बचत होती है, परंतु प्राय: सूचनादाता शोध समस्या से संबंधित उत्तरों का सतही उत्तर देकर बचना चाहता है।

NOTES

• **पैनल सर्वे (Panel Survey)** — इस प्रविधि में सर्वेकर्ता

Scanned with CamScanner

जनसंख्या से चुने गये एक ही व्यक्तियों के समूह या प्रतिदर्श का साक्षात्कार दो या दो से अधिक बार करता है और समस्या के प्रति उनके विचारों के आधार पर निष्कर्ष पर पहुँचने की कोशिश करता है। चूँकि इसमें एक ही समूह का अध्ययन कई बार किया जाता है, इसलिए इससे प्रयोज्य अत्यधिक संवेदनशील या निष्क्रिय हो जाते हैं, जिससे सर्वे दोषपूर्ण हो जाता है।

इसप्रकार सर्वे विधि के विभिन्न प्रविधियों के माध्यम से अध्ययनकर्ता शोध समस्या से संबंधित आँकड़े संग्रह कर एक निश्चित निष्कर्ष पर पहुँचने का प्रयास करते हैं।

 # व्यक्ति इतिहास = लेखन विधि — इस विधि द्वारा समाज मनोवैज्ञानिक किसी व्यक्ति या समूह या किसी संस्था के जीवन घटनाओं से संबंधित तथ्यों का एक इतिहास तैयार करता है। इसके लिए वह अन्य समाज मनोविज्ञान की प्रविधियों की सहायता लेता है। इससे प्राप्त आँकड़ों या सूचनाओं का विश्लेषण करके उसके जटिल व्यवहार पैटर्न को समझने का प्रयास करता है। इस विधि की सफलता बहुत हद तक शोधकर्ता की व्यक्तिगत कार्यकुशलता तथा बुद्धिमता पर निर्भर करती है।

इस विधि में सामान्यतः यह देखा जाता है कि प्रयोज्य अपने जीवन की घटनाओं के बारे में सही सही विवरण न देकर उसे भ्रामक बना देता है। जिससे प्राप्त निष्कर्ष दोषपूर्ण हो जाता है।

 # क्षेत्र अध्ययन विधि — क्षेत्र अध्ययन विधि एक ऐसी अप्रयोगात्मक शोध विधि है, जिसमें वास्तविक सामाजिक परिस्थिति में विभिन्न तरह के समाजशास्त्रीय, मनोवैज्ञानिक तथा शैक्षिक चरों के बीच अन्तःक्रियाओं का अध्ययन करके इन चरों के बीच आपसी संभावित संबंधों की खोज की जाती है। जैसे- दंगा में व्यक्तियों का व्यवहार, हड़ताल के दौरान कर्मचारियों का व्यवहार आदि।

Scanned with CamScanner

क्षेत्र अध्ययन विधि में चूँकि चरों पर नियंत्रण का अभाव होता है। अतः इसकी विश्वसनीयता कम होती है। यह निश्चित करना कठिन होता है कि प्राप्त परिणाम वास्तव में किस चर के कारण प्राप्त हुई है। अतः इससे प्राप्त परिणामों में स्थिरता तथा संगति का अभाव रहता है।

इन परिसीमाओं के बाद भी क्षेत्र अध्ययन विधि का प्रयोग समाज मनोविज्ञान में काफी होता है क्योंकि कुछ सामाजिक समस्याएँ ऐसी होती हैं जिनका अध्ययन इसी विधि से उपयुक्त होती है।

 # समाजमितीय विधि— इस विधि के द्वारा समूह में सदस्यों का एक-दूसरे के प्रति स्वीकरण तथा अस्वीकरण के माध्यम से समूह की संरचना, सामाजिक पद तथा समूह सदस्यों का अन्तर्वैयक्तिक या पारस्परिक संबंधों आदि का अध्ययन किया जाता है।

सेकर्ड तथा बैकमेन का मानना है कि समाजमितिय विधि द्वारा समूह सदस्यों के पारस्परिक संबंधों एवं समूह संरचना का अध्ययन मात्र सतही ढंग से होता है, क्योंकि समूह में सदस्य कई कारणों से अपने वास्तविक पसंदों एवं नापसंदगियों को खुलकर व्यक्त करने में असहमता महसूस करते हैं।

इन परिसीमाओं के बाद भी समाज मनोविज्ञान में समाजमितीय विधि एक लोकप्रिय विधि है। क्योंकि इसका प्रयोग मनोवैज्ञानिकों ने समूह संरचना, समूह मनोबल, समूह समग्रता, समूह नेतृत्व तथा समूह सदस्यों का पारस्परिक संबंधों के अध्ययन में सफलतापूर्वक किया है।

Scanned with CamScanner